सतीनाथ षडंगी

एक मुलाकात चींटी से

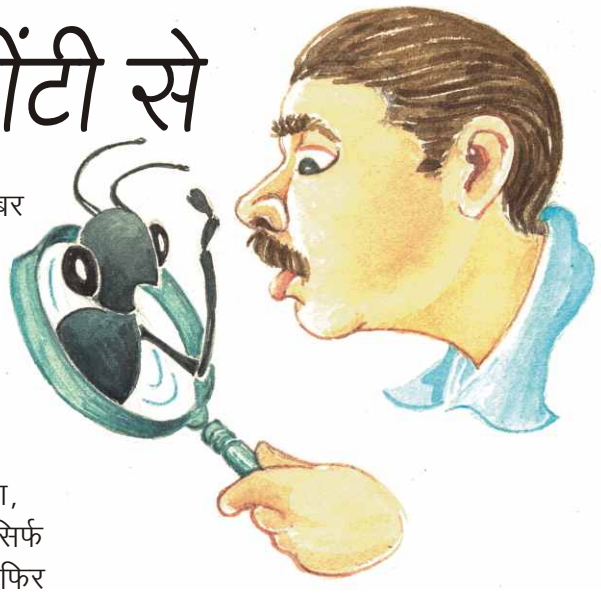

"सुनते हो, धरती गर्मा रही है। प्रलय आने वाला है। तुम्हें कुछ खबर है।" गंध की भाषा में मैं चिल्लाया। चींटियाँ गंध की भाषा बोलती हैं। इसलिए उनसे बातचीत करने के लिए मैंने अभी-अभी यह भाषा सीखनी शुरू की थी। लेकिन शायद मैं कुछ ज़्यादा ही ज़ोर से बोल गया। फर्श पर मेरी नाक के ठीक पास मछली का काँटा ढोकर ले जाते हुए चींटियों का झुण्ड ठहर गया। वैसे ही जैसे राह चलते किसी बन्दर की हरकत को देखने स्कूल जाते बच्चे रुक जाते हैं। उनमें से एक चींटा आगे आया, हँसा और बोला, "तुम लोगों ने तो इस पर फिल्म भी बना दी है। भैया, तुम्हारे तो सिर्फ पाँव ही पड़ते हैं धरती पर। हमारा तो पेट घिसटता है उस पर।" फिर एक दूसरा चींटा कहने लगा, "प्रलय-वलय की बात हमसे न करो मियाँ। यहाँ तो हाल यह है कि तुम्हारा बच्चा मूत देता है तो हमारा खानदान बाढ़ में बह जाता है।" उसने अपनी दो टाँगों को काँटे पर और दो को कमर पर ऐसे रखा था जैसे मछली का काँटा किसी के जन्मदिन की पार्टी के लिए नहीं बल्कि किसी किले पर फतह करने के लिए ले जाया जा रहा हो। उधर से एक और चींटा आया। वह देखने में नर्मदिल था। उसने कहा, दुखी मत हो, बाद में वही बच्चा जब चोरी से शक्कर खाता है तो हमारा पूरा कुनबा ज़मीन पर गिराए दानों पर पल जाता है। कभी प्रलय ला सकता हूँ और कभी शक्कर के दाने भी गिराता हूँ। मुझ पर भगवान होने का अहसास सवार हो रहा था पर पहले चींटे ने उस पर घड़ा भर पानी डाल दिया। उसने कहा, "पर तुम्हारे लिए शक्कर के दाने कोई आसमान से गिराने वाला नहीं है।" बात को हल्का करने के लिए मैंने एक सवाल पूछा कि जब कभी भी मैं कुछ खाने की चीज़ छुपाकर रखता हूँ तो तुम्हारी फौज को पता कैसे चल जाता है? फौज के कमाण्डर जैसे दिखने वाले चींटे ने कहा, "यही तो हमारी भाषा का कमाल है। तुम लोग शब्दों की भाषा बोलते हो – शक्कर, पहाड़, नदी, बरसात आदि। हमसे शब्द नहीं बोलते, उनकी गंध बोलती है। तुम्हारा छुपाया हुआ लड्डू हम से बोलता है।"

फिर वह नर्मदिल चींटा आगे आया। कहने लगा, "भैया, हमसे तो लड्डू बनने से रहा – गन्ना उगाओ, चने उगाओ, गुड़, बेसन बनाओ गूँथो, तलो, पकाओ। यह सब हमसे नहीं होता। सो, हम आप लोगों से लड्डू बनवाते हैं और फिर उस पर सिर्फ अपने इस हुनर के बल पर कब्ज़ा कर लेते हैं। लड्डू का कतरा-कतरा हमसे बोलता है साहब!" टेलीविज़न पर मौसम का हाल भी चींटियाँ नहीं सुनती। समाचार में मौसम साफ होना बताया जाता है और उधर चींटियों की फौज बारिश से बचने के लिए अपने अण्डे उठा-उठा कर दीवार के छेद के पीछे अपने घर ले जा रही होती है।

मुझे लगा कि बरसात होने के पहले उसे सूँघ लेने वाली चींटियों से मैं प्रलय आने के पहले की गंध के बारे में पूछूँ। पर, यह पूछ पाऊँ अभी इतनी भाषा कहाँ आई है मुझे।